भाषा के अभिलक्षण :- प्रवृत्तियाँ एवं विशिष्टताएँ

(i) भाषा सामाजिक वस्तु है, भाषा की उत्पत्ति एवं विकास समाज में ही सम्भव है, भाषा समाज की, समाज द्वारा एवं समाज के लिए होती है। भाषा सीखने का आरंभ माँ के संपर्क से ही होता है, इसलिए मातृभाषा का महत्व है। माता-पिता परिवार सभी समाज के अंग हैं। भाषा की अनिवार्यता सामाजिक संपर्क के लिए भी है। मौलिक आधार पर भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ती है, और साहित्य की दृष्टि से वह भावों के साथ विचारों को सुरक्षित करके अगली पीढ़ी को सौंप देती है। भाषा का सामाजिक पक्ष अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

(ii) भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न होता है, भाषा गतिशील है, समाज इसे गतिशील बनाता है। संपर्क के कारण मनुष्य भाषा सीखता है, सीखने में ध्वनिगत, रूपगत और अर्थगत परिवर्तन होते रहते हैं। मनुष्य न तो भाषा उत्पन्न कर सकता है न ही उसे नष्ट। भाषा तो जलधारा है जो अपने उद्गम से लेकर संगम तक निरंतर बहती रहती है।

(iii) भाषा सर्वव्यापक है - एक मनुष्य का दूसरे मनुष्यों से संबंध तथा मानव समाज के बीच संबंध विचारों के आदान-प्रदान पर आधारित है। विचारों के आदान-प्रदान पर भाषा निर्भर है, व्यक्ति का चिंतन व्यक्ति के परस्पर संवाद तथा व्यक्तिगत सामाजिक संबंध की सर्वव्यापकता को प्रमाणित एवं स्थापित करता है।

(iv) भाषा संप्रेषण का मौखिक साधन है - संकेतों द्वारा भाव संप्रेषण न तो पूर्ण है न ही स्पष्ट है। उच्चारण अवयवों के द्वारा भाषा की ध्वनियों का सहयोग मिल जाता है; ध्वनि में आरोह-अवरोह, बलाघात, अनुतान आदि का प्रभाव रहता है। इसी से उच्चरित भाषा को लिखित भाषा से प्रभावशाली माना जाता है; आमने-सामने बोलने और सुनने वाला भाषा के जिस रूप का व्यवहार करता है वह रूप मौलिक होता है. और भाषा के इसी मौलिक रूप को प्रामाणिक माना जाता है।

Scanned with Cam

(v) भाषा अर्जित सम्पत्ति है— प्राणियों में मनुष्य के पास भाषा सीखने की क्षमता है, मनुष्य जिस परिवार परिवेश समाज और वातावरण में रहता है, उसी के अनुरूप भाषा को अपने मस्तिष्क में एकत्रित करता जाता है। भाषा सीखना ही भाषा का अर्जन करना है, समाज के साथ भाषा अनिवार्य रूप से जुड़ी है, व्यक्ति का संबंध भी समाज के साथ शाश्वत है इसीसे व्यक्ति समाज में व्यवहृत और प्रयुक्त भाषा को ग्रहण कर लेता है।

(vi) भाषा की निश्चित सीमाएँ होती हैं— प्रत्येक भाषा की अपनी भौगोलिक सीमाएँ होती हैं, अर्थात एक निश्चित भाषा प्रयुक्त होती है, उसे पूर्ववर्ती एवं परवर्ती भाषा उससे भिन्न होती है। जैसे:- असमी भाषा - असम सीमा तक प्रयुक्त होती है, इसके बाद बंगाल की सीमा शुरु हो जाती है।

(vii) भाषा नैसर्गिक क्रिया है— मातृभाषा सहज रूप में अनुकरण रूप में सीखी जाती है। अन्य भाषाएँ भी बौद्धिक प्रयास से सीखी जाती हैं जब मातृभाषा सीखी जाती है, तब बुद्धि अविकसित होती है, इसीलिए परिश्रम का बोध नहीं होता। अन्य भाषा सीखते समय बुद्धि विकसित होने के कारण श्रम का अनुभव होता है। पर कोई भी भाषा कितनी भी कठिनाई से सीख लेने पर व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बन जाता है; जिस प्रकार शारीरिक चेष्टाएँ अनायास होते हैं ठीक उसी प्रकार भाषा ज्ञान के पश्चात उसका प्रयोग सहज एवं स्वतः हो जाता है।

(viii) भाषा स्थिरीकरण और मानकीकरण से प्रभावित होती है— भाषा में वैविध्य होता है, यह विविधता एकता की ओर बढ़ती है, अनेक रूपों में हमारे सामने भाषा आती है, और एक बिंदु पर आकर स्थिर हो जाती है और भाषा का सामान्य व्यवहार मानक रूप में सामने आता है, केंद्र सरकार के काम-काज, साहित्य-रचना, आकाशवाणी, दूरदर्शन, संचार-माध्यम, शिक्षा, समाचार-पत्र आदि के लिए भाषा के जिस रूप का व्यवहार होता है, वह रूप सदियों में स्थिर होता है, और स्थिर होने के बाद मानक सौन्दर्य बन जाता है।

P.T.O.

Scanned with Cam

(iv) भाषा पहले उच्चरित रूप में प्रभावित होती है - भाषा परिवर्तन सबसे व्यवहार के धरातल पर मौखिक रूप में दिखाई पड़ता है, मौखिक रूप में परिणत हो जाने के बाद कभी-कभी भाषा लिखित रूप में परिवर्तित नहीं भी हो सकता। अर्थात् उच्चरित रूप में भाषा सर्वाधिक अर्थपूर्ण ढंग से प्रयुक्त होती है।

(x) भाषा का प्रवाह कठिनता से सरलता की ओर जाता है - मनुष्य स्वभावतः अल्प परिश्रम से अधिक कार्य करना चाहता है, इसी आधार पर किया गया प्रयत्न भाषा में सरलता की गुण भर देता है जैसे :- डॉक्टर (साहब) डॉक्टर साब) डॉटर साब > डाक्टर साब।

(xi) भाषा अंतिम रूप नहीं है - भाषा चिर परिवर्तनशील है किसी भी भाषा का अंतिम रूप होना निरर्थक है, समय और समाज की माँग के अनुरूप भाषा आविष्कार होता है।

(xii) भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ती है - भाषा का आरंभिक रूप संयोगावस्था या श्लेषावस्था होता है। धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन होता है, और भाषा वियोगावस्था या विश्लेषणावस्था की ओर बढ़ती है।

(xiii) भाषा का आरंभ वाक्य से हुआ है - सामान्यतः भाव या विचार पूर्णता के द्योतक होते हैं, पूर्ण भाव की अभिव्यक्ति सार्थक एवं स्वतंत्र पूर्ण अर्थवान इकाई वाक्य से ही संभव है। कभी-कभी एक शब्द से ही पूर्ण अर्थ का बोध हो जाता है। जैसे - जाओ, खाओ वास्तव में ये शब्द न होकर वाक्य के एक विशेष रूप में प्रयुक्त होता है, ऐसे वाक्यों में वाक्यांश छुपा होता है, श्रोता ऐसे वाक्यों ~~(में वाक्यांश छुपा होता है)~~ को सुनकर प्रसंग के आधार पर पूरा अर्थ ग्रहण कर लेता है।

(xiv) भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं है - मनुष्य शरीरांगों के साथ जन्म ग्रहण करता है, जन्तु भाषिक धरोहर उसे यूँ ही नहीं मिल जाती, पिता की संपत्ति के हिस्से की तरह उसे तो परिवेश में समाज द्वारा ही भाषा अर्जित करना पड़ता है।

(xv) भाषा सामाजिक स्तर पर आधारित होती है - भाषा का सामाजिक स्तर पर भेद हो जाता है, विभिन्न क्षेत्र में प्रयुक्त किसी भी भाषा की आपसी भिन्नता देखी जा सकती है। सामान्य रूप में सभी हिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं पर विभिन्न क्षेत्र में

Scanned with Cam

प्रयुक्त हिंदी में पर्याप्त भिन्नता मिलती है यह भिन्नता इसकी शैली का आंतरिक, व्यवहारिक एवं सामाजिक स्तर के कारण होती है, भाषा के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली होती है, जिसके कारण भिन्नता नजर आती है।

(xvi) भाषा व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है— भाषा एक व्यक्ति विशेष की संपत्ति नहीं होती है, यह सामाजिक संपत्ति होती है, क्योंकि भाषा किसी व्यक्ति विशेष की नहीं हो सकती, अतः भाषा सामाजिक संपत्ति है, भाषा की देखभाल समाज के द्वारा की होता है। अतः भाषा व्यक्तिगत संपत्ति न होकर एक सामाजिक संपत्ति है।